HENNA

"MEHENDI"

मेंहदी

मेंहदी

HENNA
("MEHENDI")

In North India, Henna has been an important item in the cosmetics of women. Vermilion in the parting of the hair, "*bindi*" on the forehead, Henna on the palms, and "*mahavar*" on the feet have been considered of vital importance in their make-up. At weddings and in important festivals, young ladies never forget to decorate their hands with henna or "mehendi" designs. The henna painted hands of brides have great emotional significance. Man started using the leaves of this plant long ago as soon as he discovered their beautifying effect and utility. In English it is known as "*Lawsonia*", and its Persian name is "*Hina*". It belongs to the botanical family "Loosenstife" and is found in many Asian countries. For thousands of years, Henna has been used in Egypt,Mesopotamia,and India. It is a shrub, the leaves of which are crushed into a paste and applied on the palms; after some time, when the paste is washed away, it leaves an orange-red colour; the effect of this is cooling and pleasing. Besides beautifying hands and palms, it is also used as a hair-dye and hair-conditioner. Its flowers and fruits are used for some Ayurvedic and Unani medicines, and a perfume *"Hina Itr"* is made out of its fragrant leaves. On account of its multi-utility, Henna-(Mehendi) industry has grown and spread and it has come to be regarded as a symbol of Indian culture.

The practice of crushing its green leaves for application has existed for a long time. But in recent times, the leaves are being dried, sealed into packets, and marketed in far-off places. Faridabad city in Haryana has become famous as a centre of this industry. The art of applying Henna in intricate embroidery-like designs has been developed into a highly sophisticated art and if you watch the deftness with which girls specialised in the art do it, you are struck with wonder at their speed, and intricate designs. When the paste is washed off after it has dried up on the palms or feet, the beautiful designs emerge in a beautiful orange-red colour.

Nowadays competitions are held in the art of Henna-designs, and the Prizes have inspired girls to achieve excellence in the art. Hands decorated and scented with colourful Henna designs convey a unique message of love in India.

Susheela Misra

मेंहदी

मेंहदी

उत्तर भारत में स्त्रियों के सौन्दर्य प्रसाधनों में मेंहदी का बड़ा सम्मान है। माँग, बिन्दी, मेंहदी, महावर यहाँ सदियों से नारी के श्रृंगार का प्रतिमान रहे हैं।

शादी–विवाह के अवसर हों या तीज त्यौहारों की धूम, लड़कियाँ अपने हाथों में मेंहदी रचाना नहीं भूलती हैं। दुल्हन की सजावट में मेंहदी से सजे हाथों की बड़ी भावुक भूमिका रहती है।

मेंहदी एक प्राकृतिक, वानस्पतिक, श्रृंगारिक साधन है जिसकी सुन्दरता और गुणों को पहचान कर मनुष्य ने उसका उपयोग प्रारम्भ किया। मेंहदी को अंग्रेजी में ''लासोनिया'' के नाम से जाना जाता है और फारसी में ''हिना'' कहते हैं। यह ''लोसेंसटाइफ़'' कुल का पौधा है, जो एशियायी देशों में होता है। मिस्र, मेसोपोटामिया और भारत में मेंहदी का इतिहास हजारों बरस पुराना है। मेंहदी का वृक्ष एक झाड़ी की तरह होता है जिसकी हरी पत्तियाँ पीस कर इस्तेमाल की जाती है और जो रचने पर लाल गुलेनारी रंग देती है। यह स्वभाव से शीतल और शरीर के लिए सुखदायक है। मेंहदी का रंग हथेलियों, पैरों को सजाने के अलावा अन्य उद्योगों में भी प्रयोग किया जाता है। सफेद बालों को रंगने तथा कंडीशनिंग के लिए अब मेंहदी की माँग पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। इसके फूल और फल आयुर्वेदिक तथा यूनानी दवाओं में काम आते हैं और इनकी खुशबू से ''हिना'' इत्र बनाया जाता है। इसलिए मेंहदी का व्यवसाय आजकल बड़े स्तर पर किया जाता है और यह भारतीय परिवेश की एक पहचान के रूप में जाना जाने लगा है।

मेंहदी की हरी ताज़ी पत्तियों को पीस कर लगाने की तो परम्परा बहुत पुरानी है। अब उन पत्तियों को सुखाकर पिसवा कर पैकेटों में भर कर दूर–दूर तक बाजारों में पहुँचाया जाता है। हरियाणा प्रदेश का फरीदाबाद शहर मेंहदी उद्योग के लिए सबसे अधिक प्रसिद्ध है, जहाँ इसी के औद्योगिक प्रतिष्ठान हैं।

पहले मेंहदी हाथ–पैरों में लेप कर लगाई जाती थी लेकिन वर्तमान में मेंहदी लगाना एक ललित कला मानी जाने लगी है। मेंहदी लगाने में कुशल स्त्रियाँ कशीदेकारी की तरह बारीक काम करती हैं और हाथों में बहुत खूबसूरत बेल–बूटे रखती हैं। इस कला में कुशल लड़कियाँ यह काम इतनी तेजी से करती हैं कि देखने वाले अचम्भित रह जाते हैं। सूख जाने के बाद हथेलियाँ धो ली जाती हैं और वो सुन्दर चित्रांकन नारंगी–लाल रंग में उभर आता है।

आजकल मेंहदी रखने की कला प्रतियोगिताओं के आयोजन किये जाते हैं और पुरस्कार दिये जाते हैं जिससे लड़कियाँ इस गुण में और निपुण होती जा रही हैं।

रंगदार मेंहदी से सजे हुए महकते हाथ प्रेम–भावना का एक अनुपम सन्देश देते हैं, जो भारतीयता का गौरव है।

छाया चित्र : **योगेश प्रवीन**

योगेश प्रवीन

अंग्रेजी अनुवाद : **सुशीला मिश्रा**

निदेशक संस्कृति विभाग उ.प्र. के लिये निदेशक भारतेन्दु नाट्य अकादमी ए-2/58, गोमती नगर लखनऊ द्वारा प्रकाशित एवम् **शिवम आर्ट्स** 211, निशातगंज, लखनऊ दूरभाष- 386389 द्वारा मुद्रित।